delhi_Page 1 and 2 14/04/2015 09:37 Page 7

हे पथिक, पथभ्रमित ना हो...

''कुछ बनने के लिए केवल इतना ही काफी नहीं है कि आपकी इच्छा वैसा बनने की है, उसके लिए आपको अपनी समग्र शक्ति को एकाग्र करके एक लक्ष्य पर केंद्रित करना होगा। यदि आप ऐसा नहीं कर पाते, तो असफलताओं के लिए आप स्वयं दोषी हैं – भाग्य या ईश्वर को ढ़ाल के रूप में प्रयोग करने से बात और भी बिगड़ेगी।'' .....

पने लक्ष्य की ओर बढ़ने से पहले इस बात को कदापि न भूलें कि आप जिस दिशा की ओर मुंह किए हैं, उधर ही आप जाएंगे। यदि आपका लक्ष्य उत्तर में है और आप दक्षिण की ओर बढ़ रहे हैं, तो आप कभी अपने लक्ष्य तक नहीं पहुंच पाएंगे। आपका लक्ष्य आपके सामने होना चाहिए।

आपके इर्द-गिर्द बिखरे लोगों में सत्तर प्रतिशत लोग इसी कारण दरिद्रतापूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे हैं कि उनका लक्ष्य कुछ था और वह बढ़े विपरीत दिशा में। अपनी इस असफलता को वे लोग बड़े ही जानदार तर्क देकर छिपाते हैं –

यदि आप उनसे पूछें कि ऐसा क्यों है, क्यों उन्होंने दूसरों की तरह तरक्की नहीं की? तो ऐसे किसी भी सवाल के जवाब में उनके पास गिने-चुने एवं पेटेंट उत्तर होते हैं –

– हमें कभी उन्नति का अवसर ही नहीं मिला।

– भाग्य ने कभी हमारा साथ ही नहीं दिया।

– परिस्थितियां हमेशा हमारे विरुद्ध रहीं।

– हम तो शिक्षा के अभाव में पिछड़ गए।

ऐसे ही या इनसे मिलते-जुलते बहाने बनाकर वह अपने आपको बेचारा, अभागा या बदनसीब सिद्ध करने की चेष्टा करते हैं।

ऐसा होता भी है। उनकी व्यथा-कथा सुनकर सामने वाला उन्हें वैसा ही सम्बोधन देने लगता है।

ऐसे लक्ष्य से भटके लोग जीवन भर इसी प्रकार झींखते-भटकते रहते हैं, किन्तु जो कर्मशील होते हैं, वे इनसे बिल्कुल विपरीत होते हैं। उनका स्वयं पर नियंत्रण होता है। उनका मन और उनकी बुद्धि सदा उनके नियंत्रण में रहती है। वे आदतों के दास नहीं होते। उनके मन में कभी यह विचार नहीं आता कि हमारे मन में फलां कार्य को करने की उमंग पैदा होगी या नहीं? या हम कर पाएंगे या नहीं?

उनके मन में यदि कोई प्रश्न उठता है तो सिर्फ यह कि यह काम हमारे लिए श्रेष्ठ है या नहीं। यदि उनका अन्त:करण इस प्रश्न का सकारात्मक उत्तर देता है, तो वह तुरन्त उस कार्य को करने के लिए कटिबद्ध हो जाते हैं।

जिन लोगों का कार्यक्रम नियत होता है, वे कठिनाइयों का उल्लेख बहुत कम करते हैं। वे कभी ऐसे प्रश्न नहीं उठाते कि उनके लक्ष्य तक पहुंचने वाला मार्ग सरल है या कठिन। उनका ध्यान केवल अपने लक्ष्य की ओर लगा होता है।

– अपने लक्ष्य पर उनकी नज़रें केंद्रित रहती हैं।

– वे निर्भीक होकर अपनी डगर पर बढ़ते रहते हैं।

– आपकी नज़र तो अपने लक्ष्य पर होनी चाहिए।

लक्ष्य सामने है। उसका निशाना साधकर आपको तीर चलाना है। आपने तीर चलाया, पर निशाना नहीं लगा। यह कोई हैरानी या परेशानी की बात नहीं होगी, क्योंकि अपना लक्ष्य स्पष्ट रूप से देखने के बावजूद भी बहुत से लोग उसे भेद नहीं पाते। कारण, उनके हाथ सधे हुए नहीं होते।

अतएव निशाना चूक जाने पर भी आपको निराश होने की आवश्यकता नहीं है।

फिर कदम बढ़ाएं, पुन: प्रयास करें।

कभी न कभी निशाना लग ही जाएगा। आप यह देखें कि उस कार्य के लिए आपकी ऊर्जा उतनी ही है या नहीं, जितनी कि वास्तविक रूप से चाहिए। ऊर्जा न अधिक हो, न कम।

इस बात को हम उदाहरण से समझ सकते हैं –

आपकी ऊर्जा

पानी को जब तक दो-सौ बारह डिग्री तक गरम करके भाप न बनाई जाए, तब तक इंजन अपनी जगह से हिल नहीं सकता और न ही गाड़ी को खींच सकता है। यहां तक कि दो-सौ दस डिग्री तक भी गरम करने से इंजन नहीं चल सकता और गाड़ी नहीं खींची जा सकती।

इसी प्रकार अनेक लोग जीवन की गाड़ी को गुनगुने पानी से चलाने की कोशिश करते हैं और बहुत हुआ, तो उबलते पानी से चलाने का प्रयत्न करते हैं, लेकिन फिर भी उनकी प्रगति नहीं हो पाती, वे आगे नहीं बढ़ पाते।

वास्तव में उनके इंजन में लगे बॉयलर में पानी दो-सौ दस डिग्री तक ही गरम हो पाता है और उनके जीवन की गाड़ी जहां-की-तहां खड़ी रह जाती है। इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि उनका उत्साह काम के प्रति उतना तेजस्वी नहीं हो पाता, जितना होना चाहिए। उत्साह मन्द होने पर काम में सफलता नहीं मिल सकती, ठीक उसी प्रकार जिस तरह गुनगुना पानी इंजन नहीं चला सकता।

जब तक कोई व्यक्ति किसी काम में अपनी आत्मा को सम्पूर्ण रूप से नहीं लगा देता, अपनी सम्पूर्ण जीवन-शक्ति को किसी काम में नहीं लगा देता, तब तक उसे किसी भी प्रकार की सफलता अथवा उपलब्धि की आशा नहीं करनी चाहिए।

''जब तक व्यक्ति एकनिष्ठ होकर अपने मन को किसी एक बिन्दु पर एकाग्र नहीं करता, तब तक उन्नति के पथ पर अग्रसर नहीं हो सकता।''

समग्र शक्ति एकत्रित करो

फिलिप्स ब्रुक्स नवयुवकों से वार्तालाप करते हुए, उन्हें इस बात के लिए प्रेरित करते थे कि वे कुछ बनने के लिए, कुछ करने के लिए काम में अपनी समस्त शक्ति नियोजित कर दें।

कुछ बनने के लिए केवल इतना ही पर्याप्त नहीं कि आपकी इच्छा वैसा बनने की हो। उसके लिए आपको अपनी समग्र शक्ति को एकत्र करके एक लक्ष्य पर केन्द्रित करना होगा। हर व्यक्ति को यह अधिकार प्राप्त है कि वह चाहे जिस वस्तु को चाहे, जिसकी इच्छा करे, लेकिन उसे प्राप्त नहीं कर पाता है, जिसका शारीरिक एवं मानसिक संतुलन सही हो। केवल इच्छामात्र से ही कुछ नहीं हो सकता। इच्छा करने और कर्म करने में आकाश-पाताल का अंतर है।

इच्छा गुनगुना पानी है, जो जीवन की गाड़ी को लक्ष्य तक नहीं पहुंचा सकती, लेकिन वही गुनगुना पानी जब दो-सौ बारह डिग्री पर गरम होकर खौलने लगता है– यानी आप अपने उद्देश्य के प्रति समग्र शक्ति लगाकर प्रयत्न करने लगते हैं तो आपकी गाड़ी आपके लक्ष्य तक अवश्य पहुंच जाएगी।

लक्ष्य बिना कुछ नहीं

लक्ष्य के बिना कोई भी व्यक्ति मौलिक अथवा रचनात्मक कर्ता नहीं बन सकता और जब तब व्यक्ति एकनिष्ठ होकर अपने मन को किसी एक ही बिन्दु पर एकाग्र नहीं करता, तब तक उन्नति के पथ पर अग्रसर नहीं हो सकता और न अपने जीवनोद्देश्य को ही प्राप्त कर सकता है।

अत: व्यक्ति को चाहिए कि वह अपने काम-धन्धे को ठीक वैसा ही देखे जैसे एक कलाकार अपनी सर्वोत्तम कृति को अपनी ही प्रतिमूर्ति समझता है और उसके विषय में बातचीत करके स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करता है। जितनी सन्तुष्टि उसे इस बात से होती है, उतनी अन्य किसी बात से नहीं होती, परन्तु खेद की बात है कि अनेक लोगों को अपने पेशे में तनिक भी रुचि नहीं होती और उन्हें बड़ी सरलता से उस धन्धे से अलग किया जा सकता है। -ब्र.कु. प्रीति

वर्रा-कानपुर(उ.प्र.)। नारी सशक्तिकरण अभियान का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए नारी समर्थ संस्था की अध्यक्षा गीता बहन, सौरव शिक्षा सदन की प्रिन्सीपल सरोज बहन, ब्र.कु. शशि, ब्र.कु. निधि व ब्र.कु. नीतू।

ढ़कोली-चण्डीगढ़। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए एकता नागपाल,मेम्बर ऑफ म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन एंड प्रेज़िडेंट ऑफ वुमेन विंग ऑफ बी.जे.पी.। साथ हैं एस.देवेन्द्र सिंह बरार,मेम्बर ऑफ म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन, ब्र.कु. हरविन्दर, ब्र.कु. राजिन्दर व अन्य।

राजगढ़-ब्योरा। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए जनपद पंचायत सदस्या मोना सुस्तानी, प्रो. वासंती मोघे, डॉ. रचना नामदेव, एडवोकेट सायदा कुरैसी, ब्र.कु. मधु, शशि शर्मा व रश्मि तिवारी।

सारंगपुर। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित 'माता तू संस्कार निर्माता' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए तहसीलदार अनिता पटेल, महिला मंडल अध्यक्ष शोभा पंचोली, महिला बाल विकास परियोजना अधिकारी प्रीति शर्मा, समाजसेविका किरण भल्ला, पूर्व लायन्स क्लब उपाध्यक्ष भावना वर्मा व ब्र.कु. विजयलक्ष्मी।

फतेहपुर। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित हैं डॉ. निर्मल खीखर, भारतीय विद्यापीठ की डायरेक्टर जेलेजा किशोर, विनायक कॉलेज की प्रिन्सीपल रेखा जोशी, टीचर अनीता शर्मा, ब्र.कु. सुनीता व अन्य।

जम्मू। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर प्रिया सेठी,एम.ओ.एस., इनफॉरमेशन एज्युकेशन एंड कल्चर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुदर्शन। साथ हैं ब्र.कु. नैना, ब्र.कु. रविन्दर तथा अन्य।